

## रॉबर्ट वानॉय, किंग्स, व्याख्यान 9

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय, डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्सेब्रांट

### ऊँचे स्थान - आसा, जेरोबाम - सुनहरे बछड़े

ऊँचे स्थान - आसा

हम ऊँचे स्थानों के बारे में बात करने जा रहे थे। इसमें कहा गया है कि आसा ने ऊँचे स्थानों को नहीं हटाया। वह 1 राजा 15, पद 14 में है। उसने ऊँचे स्थानों को नहीं हटाया। ऊँचे स्थानों पर चर्चा करते समय, मैं 1 किंग्स 3:2 का हवाला देना चाहता हूँ (आपमें से कुछ के पास शायद एनआईवी अध्ययन बाइबिल नहीं है): यह सुलैमान के बारे में कहता है, "लोग अभी भी ऊँचे स्थानों पर बलिदान कर रहे थे क्योंकि वहाँ कोई मंदिर नहीं था।" फिर भी प्रभु के नाम के लिये बनाया गया है।" अब, चूँकि यह शब्द यहाँ राजाओं के यहाँ पहली बार आया है, मैंने उस बिंदु पर एक नोट लिखा था जो यह कहता है: "कनान में प्रवेश करने पर, इस्राएलियों ने अक्सर अपनी वेदियाँ ऊँची पहाड़ियों पर, शायद पुराने बाल पर, स्थापित करने की कनानी प्रथा का पालन किया। साइटे, हालांकि हमेशा नहीं--जरूरी नहीं कि ऐसा हो। इन ऊँचे स्थानों पर इज़राइली पूजा की वैधता का सवाल लंबे समय से बहस का विषय रहा है। यह स्पष्ट है कि इस्राएलियों को बुतपरस्त वेदियों और ऊँचे स्थानों पर कब्ज़ा करने और उन्हें प्रभु की पूजा के लिए उपयोग करने से मना किया गया था। यह एक ऐसी चीज़ है जो बहुत स्पष्ट है। जब इज़राइल कनान में आये तो उन्हें बुतपरस्त वेदियों पर कब्ज़ा नहीं करना था और बस उन्हें उन स्थानों में परिवर्तित करना था जहाँ वे प्रभु की पूजा करेंगे।

यदि आप गिनती 33:52 को देखते हैं, तो आप वहाँ पढ़ते हैं कि प्रभु कहते हैं, "अपने सामने से देश के सभी निवासियों को बाहर निकालो। उनकी सब खुदी हुई और ढली हुई मूरतें नष्ट कर दो, और उनके सब ऊँचे स्थान ढा दो।" "उनके ऊँचे स्थानों को ध्वस्त करो," तो यह स्पष्ट है कि इज़राइल को केवल अन्यजातियों के ऊँचे स्थानों पर कब्ज़ा नहीं करना था। व्यवस्थाविवरण 7:5 और व्यवस्थाविवरण 12:3 में आपके समान कथन हैं; अर्थात् कनानियों के ऊँचे स्थानों को नष्ट करना। तो यह एक बात स्पष्ट है।

एक और बात जो स्पष्ट है वह यह है कि वेदियाँ केवल दैवीय रूप से स्वीकृत स्थलों पर ही बनाई जानी थीं। निर्गमन 20:24 को देखें। निर्गमन 20:24 को कभी-कभी "वेदी का नियम" भी कहा जाता है। आपके पास इसका वर्णन है कि जब इस्राएली वेदी बनाना चाहते थे तो उन्हें क्या करना था। यह कहता है, "मेरे लिये मिट्टी की एक वेदी बनाओ, और उस पर अपने होमबलि, मेलबलि, अपनी भेड़-बकरी, और अपने मवेशियों को बलि करो। जहाँ भी मैं अपने नाम का सम्मान करूँगा, मैं तुम्हारे पास आऊँगा और तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। यदि तुम मेरे लिये पत्थरों की वेदी बनाओ, तो उसे गढ़े हुए पत्थरों से न बनाना, क्योंकि यदि तुम उस पर कोई औज़ार चलाओगे, तो तुम उसे अशुद्ध करोगे। मेरी वेदी के पास सीढ़ियाँ चढ़कर न चढ़ना, ऐसा न हो कि तेरा नंगापन उस पर प्रगट हो जाए।" तो आपके पास इस बारे में विभिन्न नियम हैं कि वेदी कैसे बनाई जानी चाहिए। वेदियों की बहुलता की संभावना की कल्पना करने के लिए वेदी का नियम बिल्कुल स्पष्ट लगता है, लेकिन जब आप वेदी बनाते हैं तो आपको इन नियमों का पालन करना होता है।

लेकिन उस खंड के मध्य में, निर्गमन 20:24-26, यह कहता है, "जहाँ कहीं मैं अपने नाम का सम्मान करूँगा, वहाँ मैं तुम्हारे पास आऊँगा और तुम्हें आशीर्वाद दूँगा।" ऐसा लगता है कि इसका मतलब यह है कि वेदियाँ केवल उन स्थानों पर बनाई जानी थीं जहाँ किसी तरह से भगवान स्वयं प्रकट हुए थे, भगवान ने अपने नाम का सम्मान किया था। दूसरे शब्दों में, आप मनमाने ढंग से केवल वेदी बनाने के लिए नहीं थे, जहाँ भी आपने निर्णय लिया था कि आप वेदी बनाना चाहते हैं। तो ऐसा लगता है कि कम से कम ये दो प्रतिबंध हैं: आप बुतपरस्त वेदियों पर कब्ज़ा नहीं करते हैं, और आप केवल दैवीय रूप से स्वीकृत स्थल पर ही वेदी बनाते हैं। मुझे लगता है कि ये बातें स्पष्ट हैं।

लेकिन फिर हम 1 राजा 3:2 के इस नोट पर वापस आते हैं। यह इतना स्पष्ट नहीं है कि उपरोक्त शर्तों को पूरा करने पर वेदियों की बहुलता पूरी तरह से निषिद्ध थी या नहीं। उस पर विद्वानों की राय बंटी हुई है। कुछ लोग कहते हैं कि मंदिर बनने के बाद मंदिर के अलावा किसी भी स्थान पर कोई वैध पूजा या बलि नहीं होती थी। यह व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 को पढ़ने के एक विशेष तरीके से आता है। और कुछ लोगों को लगता है कि व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 कहता है कि जब आप भूमि में आएं, तो आप अंततः एक मंदिर बनाने जा रहे हैं, और वहाँ की वेदी ही एकमात्र वैध वेदी है। मुझे नहीं लगता कि व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 में जो कहा गया है उसे समझने का यह उचित तरीका है।

मुझे ऐसा लगता है कि व्यवस्थाविवरण पर मुद्दा मंदिर के विशेष अधिकारों का नहीं है, बल्कि मंदिर में वेदी की प्रधानता का है। ऐसा नहीं है कि यह एकमात्र वैध स्थान है, बल्कि यह प्राथमिक स्थान है जहां बलिदान दिए जाते हैं और निश्चित रूप से वह स्थान है जहां वार्षिक उत्सव आयोजित किए जाते थे। पुरुषों को एक प्रमुख दावत के लिए साल में तीन बार यरूशलेम जाना था, और उन्हें यरूशलेम में आयोजित किया जाना था। तो वहाँ एक प्राथमिक अभयारण्य था जहाँ सन्दूक था और जहाँ मंदिर था, लेकिन मुझे नहीं लगता कि इसका मतलब अन्यत्र अन्य वेदियों का बहिष्कार है। लेकिन जैसा कि मैंने कहा, इस पर कुछ असहमति है। यह इतना स्पष्ट नहीं है कि उपरोक्त शर्तों को पूरा करने पर वेदियों की बहुलता वर्जित थी या नहीं।

हालाँकि, ऐसा लगता है कि इन शर्तों का पालन नहीं किया गया; अर्थात्, बुतपरस्त वेदियों को नष्ट करना और केवल दैवीय रूप से स्वीकृत स्थलों पर वेदियों का निर्माण करना। ऐसा प्रतीत होता है कि सुलैमान के समय में भी इन शर्तों का पालन नहीं किया गया था। बुतपरस्त ऊँचे स्थानों का उपयोग भगवान की पूजा के लिए किया जा रहा था। इससे अंततः धार्मिक समन्वयवाद को बढ़ावा मिलेगा, जिसकी कड़ी निंदा की गई।

तो ऐसा लगता है कि ऊँची जगह जरूरी नहीं है *per se* कुछ गलत है, लेकिन उनका इतनी बार गलत तरीके से उपयोग किया गया कि वे इज़राइल में झूठी पूजा के प्रवेश का स्रोत बन गए: असंक्रामक प्रकार की पूजा, भगवान की पूजा के साथ बाल की पूजा का संयोजन। अनेक राजाओं के बारे में आपको ये टिप्पणियाँ मिलती हैं कि उन्होंने ऊँचे स्थान नहीं तोड़े। लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप इससे यह निष्कर्ष निकालेंगे कि सभी ऊँचे स्थान गलत थे। मुझे लगता है कि यह इस बात पर निर्भर करता है कि वहाँ किस प्रकार की पूजा की जा रही थी और क्या वह स्थान दैवीय रूप से स्वीकृत स्थल था; उस प्रकार के विचार.

**छात्र प्रश्न:** आपने यह भी उल्लेख किया था कि इस्राएली कनानियों को खत्म करने में भी विफल रहे थे, इसलिए ऐसा लगा कि वे शायद उन क्षेत्रों में रह रहे थे जहां उन विशेष स्थलों को नष्ट नहीं किया गया था।

**वर्त्राय की प्रतिक्रिया:** यह संभव है। एक और सवाल, मैं विशेष रूप से आसा के साथ थोड़ा आगे जाना चाहता हूँ, लेकिन आगे बढ़ें।

**छात्र प्रश्न:** जब एलिय्याह ने बाल को चुनौती दी...उसे टूटी हुई वेदियाँ मिलीं...

**वर्नाय की प्रतिक्रिया:** मैं इसमें नहीं जा रहा था, लेकिन मैं आपकी बात स्वीकार करता हूँ, मुझे लगता है कि इसमें कुछ बात है। यह इस तथ्य का एक अच्छा उदाहरण प्रतीत होता है कि यरूशलेम के बाहर प्रभु की वेदियाँ थीं। उसने उस वेदी का पुनर्निर्माण किया। लेकिन फिर मुझे ऐसा लगता है कि भगवान, अग्नि के माध्यम से उत्तर देकर, वास्तव में पूजा के वैध स्थान के रूप में यरूशलेम के बाहर एक वेदी पर अपनी दिव्य मंजूरी देते हैं। इसके अलावा, जब एलिय्याह इज़ेबेल के साथ उस टकराव के बाद भाग जाता है तो वह अंततः होरेब तक पहुंच जाता है। यदि आप 1 राजा 19 को देखते हैं जब प्रभु उसे दर्शन देते हैं, तो श्लोक 10 को देखें; एलिय्याह उत्तर देता है, जब प्रभु कहते हैं, "एलिय्याह तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" उसने उत्तर दिया, "मैं सर्वशक्तिमान यहोवा के लिये बहुत जोशीला रहा हूँ। इस्राएलियों ने तेरी वाचा को तुच्छ जाना, तेरी वेदियोंको तोड़ डाला, और तेरे भविष्यद्वक्ताओंको तलवार से मार डाला है।" अब जिस तरह से वह ऐसा कहते हैं उससे यह बिल्कुल स्पष्ट लगता है कि उनका मानना है कि इन वेदियों को बुरी तरह से तोड़ा गया है। इससे यह प्रतीत होता है कि यरूशलेम के बाहर वेदियों में कुछ भी गलत नहीं था, बशर्ते वे बुतपरस्त वेदियों के स्थानों पर न हों और वे दैवीय रूप से स्वीकृत स्थानों पर हों। लेकिन आप देखिए स्थिति यह थी कि लोग एक तरह से प्रभु से विमुख हो गए थे; वे वेदियों का उपयोग भी नहीं कर रहे थे, वेदियाँ टूट चुकी थीं। यह कुछ ऐसा है जिस पर एलिय्याह खेद व्यक्त करता है, जो यह संकेत दे सकता है कि यरूशलेम के बाहर वेदियाँ नहीं थीं *per se* गलत; वे गलत हो सकते हैं लेकिन गलत नहीं *per se*.

अब, आसा पर वापस जाने के लिए, 1 राजा 15:14। तुमने पढ़ा, "उसने ऊँचे स्थानों को नहीं हटाया।" अब मेरे पास एनआईवी स्टडी बाइबल में एक नोट है जिसमें मैं कहता हूँ, "यहां और 2 इतिहास 15:17 में संदर्भ उन ऊँचे स्थानों का है जहां भगवान की पूजा की जाती थी। वहाँ ऊँचे स्थान थे जहाँ भगवान की पूजा की जाती थी। 2 इतिहास 15:17 में वे फिर से आसा के बारे में बात कर रहे हैं, और आप वहां पढ़ते हैं, "यद्यपि उसने इस्राएल से ऊँचे स्थानों को नहीं हटाया, फिर भी आसा का हृदय पूरी तरह से यहोवा के प्रति समर्पित था।" इससे पता चलता है कि उनके पास ऊँचे स्थान थे जहां भगवान की पूजा की जाती थी। मुझे लगता है कि यह 2 इतिहास 33:17 में स्पष्ट है। इसका आसा से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन बस वहां की शब्दावली पर ध्यान दें।

2 इतिहास 33:17 में आप पढ़ते हैं, "तथापि लोग ऊंचे स्थानों पर बलिदान करते रहे, परन्तु केवल अपने परमेश्वर यहोवा के लिये।" इसलिए मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि कभी-कभी ऊंचे स्थानों पर पूजा करना भगवान की पूजा होती थी। अब भगवान की पूजा वैध हो सकती है या यह वैध नहीं हो सकती है, यह इस पर निर्भर करता है कि वेदी दैवीय रूप से स्वीकृत स्थान पर थी या नहीं। यह अभी भी भगवान की पूजा हो सकती थी, लेकिन एक अस्वीकृत स्थल पर। इसलिए वहां अभी भी भ्रम है। लेकिन मुझे लगता है कि आपको यह कहना चाहिए कि इस बात का संकेत है कि लोग कभी-कभी ऊंचे स्थानों पर भगवान की पूजा करते थे। मैं इसे यहां लाने का कारण यह है कि 2 इतिहास 15:17 कहता है, जैसा कि राजा करते हैं, कि आसा ने ऊंचे स्थानों को नहीं हटाया। लेकिन फिर 2 इतिहास 14:3 को देखें। 2 इतिहास 14:3, 2 से शुरू करें: "आसा ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में अच्छा और ठीक था, उसने विदेशी वेदियों और ऊंचे स्थानों को हटा दिया।"

ऐसा लगता है जैसे 2 इतिवृत्त 14:3 कहता है कि उसने विदेशी वेदी के ऊंचे स्थानों को हटा दिया" जबकि इतिहास में दूसरा संदर्भ, साथ ही राजाओं में भी, कहता है कि उसने ऊंचे स्थानों को नहीं हटाया, और फिर आप आश्चर्य करते हैं, आप क्या करते हैं पास होना? क्या यह विरोधाभास है? मुझे ऐसा लगता है कि आप 14:3 पद को लेते हैं जब यह कहता है, "आसा ने ऊंचे स्थानों को हटा दिया," उन ऊंचे स्थानों के संदर्भ के रूप में जो बुतपरस्त-कनानी पूजा के केंद्र थे। दूसरे शब्दों में, वह भेद है। इनमें से कुछ ऊंचे स्थान बुतपरस्त कनानी पूजा के लिए थे, इनमें से कुछ स्थान भगवान की पूजा के लिए थे। और जब आपके पास केवल ऊंचे स्थानों का संदर्भ होता है तो अंतर हमेशा स्पष्ट नहीं होता है। इसलिए जब आप उन कथनों पर आते हैं कि "अमुक ने वही किया जो प्रभु की दृष्टि में सही था, लेकिन उसने ऊंचे स्थानों को नहीं हटाया," मुझे लगता है कि आम तौर पर ऊंचे स्थानों का अर्थ बुरा है क्योंकि पूजा का दुरुपयोग किया गया था अक्सर। यह अक्सर स्पष्ट रूप से बुतपरस्त पूजा या बुतपरस्त वेदियों के स्थलों पर होता था, और यह इज़राइल की पूजा में बुतपरस्तों के इज़राइल में प्रवेश का एक स्रोत था। लेकिन इतना कहने के बाद भी, मुझे नहीं लगता कि ऊंचे स्थानों पर पूजा करना गलत था।

एक लेवी क्या करेगा यदि वह उस परिवार की सेवा करने जा रहा है जो बलिदान देना चाहता है? उसे क्या करना है: हर बार यरूशलेम तक जाना? यदि आप उत्तर में डैन में रह रहे हैं, तो यह

एक सप्ताह या उससे अधिक की यात्रा हो सकती है। इसकी व्यावहारिकता ऐसी है कि यदि आप यह कहने जा रहे हैं कि एकमात्र वैध पूजा यरूशलेम में थी, तो आप संक्षेप में कह रहे हैं कि लोगों के पास वास्तव में आवश्यक अनुष्ठानों को पूरा करने के साधन नहीं थे जो दिए गए थे। पेंटाटेच। यदि लेवियों को हर समय आना-जाना होता तो वे यरूशलेम में ही रुक सकते थे। हर समय आगे-पीछे क्यों जाना? बस वहीं क्यों न रहें। इस प्रकार पूरी बात अधिक अर्थपूर्ण प्रतीत होती है। आगे-पीछे जाने का कोई मतलब नहीं है।

हो सकता है कि यह भगवान की पूजा हो, लेकिन अस्वीकृत स्थलों पर। दूसरे शब्दों में, एक ऊँचा स्थान जिसे किसी ने अभी-अभी बनाया है क्योंकि उन्होंने मनमाने ढंग से एक वेदी बनाई है। और भले ही यह भगवान की पूजा थी, लेकिन उन्होंने इसे एक गैर-स्वीकृत स्थल पर किया, तो उन्होंने इसे पेंटाटेच में नियमों के संबंध में नहीं किया। यह एक कठिन प्रश्न है, लेकिन यह एक संभावना है।

**विद्यार्थी:** आप इस उच्च स्थान की मंजूरी का उल्लेख करते हैं। क्या आप हमें बता सकते हैं कि वेदी की मंजूरी कैसे दी जाएगी?

**वर्नाय की प्रतिक्रिया:** उदाहरण के लिए, बेथेल में। याकूब वहाँ गया; उसने सीढ़ी के बारे में एक सपना देखा था। उसने वहाँ एक वेदी बनाई, और प्रभु ने उसे दर्शन दिये। यह संभवतः किसी प्रकार की थियोफनी थी। निर्गमन में यही देखने को मिलता है जब यह कहा जाता है कि वह अपने नाम का वास करेगा: कि प्रभु इस स्थान पर किसी तरह से स्वयं को प्रकट करेंगे। तब वह पूजा के लिए एक वैध स्थल होगा।

यहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि ये ऊँचे स्थान वैध ऊँचे स्थान नहीं थे। ऐसा ही प्रतीत होता है, भले ही यदि आप सभी डेटा को देखें, तो ऐसा लगता है कि ऐसे ऊँचे स्थान हो सकते हैं जो वैध थे।

ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ एक अंतर है। निःसंदेह ये चीजें आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हो सकती हैं क्योंकि जब आप ये सूचियाँ प्राप्त करते हैं तो आपको मूर्तियाँ, ऊँचे स्थान और वेदियाँ सभी एक साथ उल्लिखित मिलती हैं।

आसा ने जारी रखा - 1 राजा 15 - कूशी जेरह पर विजय

खैर, चलिए आगे बढ़ते हैं। हम आसा के बारे में बात कर रहे हैं, तो 1 राजा 15 पर वापस आते

हैं। जैसा कि मैंने उल्लेख किया था, उसे एक अच्छे राजा के रूप में वर्णित किया गया है। 2 इतिहास हमें कूशी जेरह पर आसा की विजय के बारे में बताता है। यह कुछ ऐसा है जिसका उल्लेख किंग्स में नहीं किया गया है। वास्तव में कूशी जेरह कौन था, इस पर विवाद है, लेकिन वह एक बड़ी सेना और 300 रथों के साथ आया था। 2 इतिहास 14:9 में तुम ने पढ़ा, कि जेरह कूशी ने एक विशाल सेना, अर्थात् 300 रथ, ले कर उन पर चढ़ाई की, आसा उसका सामना करने को निकला, और आसा ने अपने परमेश्वर यहोवा को पुकारा। पद 12 में आपने पढ़ा, “यहोवा ने आसा से पहले कूशियों को मार डाला। कूशी भाग गये। आसा और उसकी सेना ने उनका पीछा किया और बहुत लूट-पाट की, और वे यरूशलेम को लौट गए।” और 2 इतिहास, अध्याय 15 में, आपके पास आसा द्वारा प्रायोजित एक अनुबंध नवीनीकरण उत्सव है। विशेष रूप से 2 इतिहास 15 के श्लोक 12 में आपने पढ़ा, “उन्होंने अपने पूरे दिल और आत्मा से अपने पूर्वजों के भगवान भगवान की तलाश करने के लिए एक वाचा में प्रवेश किया। जो कोई इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की खोज नहीं करेगा, उसे मार डाला जाएगा। चाहे छोटे हों या बड़े, पुरुष हों या स्त्री, उन्होंने तुरही और नरसिंगे बजाते हुए ऊंचे स्वर से जयजयकार करते हुए प्रभु के सामने शपथ खाई। यहूदा के सब लोग इस शपथ से आनन्दित हुए, क्योंकि उन्होंने पूरे मन से यह शपथ खाई थी। उन्होंने उत्सुकता से परमेश्वर की खोज की, और वह उन्हें मिल गया। इसलिये यहोवा ने उन्हें चारों ओर से विश्राम दिया।”

बेन-हदद के साथ आसा का गठबंधन - 1 राजा 15:18ff

अतः आसा के समय में यह सुधार हुआ। फिर भी, इसके बावजूद, आपने 1 राजा 15, पद 18एफएफ में पढ़ा, कि आसा ने दमिश्क के बुतपरस्त राजा बेन-हदद के साथ गठबंधन किया था। इसका संदर्भ यह था कि उत्तरी साम्राज्य के बाशा ने यहूदा पर हमला किया और रामा की किलेबंदी की, जो सीमा पर एक स्थल था। यह 1 राजा 15 के श्लोक 17 में था। रामा उत्तर और दक्षिण के बीच की सीमा पर एक स्थल था, और रामा को मजबूत करने का उद्देश्य किसी को भी यहूदा के राजा आसा के क्षेत्र में प्रवेश करने या छोड़ने से रोकना था। यह वही स्थिति है जो यारोबाम की चिंता थी। वह नहीं चाहता था कि लोग पूजा करने के लिए यरूशलेम जाएँ, इसलिए उसने उस नगर की किलेबंदी कर दी। उसने यहूदा पर कर लगाया।

आसा क्या करती है? उसने यहोवा के मन्दिर के भण्डारों से चाँदी और सोना ले लिया और अपने कर्मचारियों को दमिश्क में शासन करने वाले अराम के राजा, हेज़ियोन के पोता, तब्रिमोन के पुत्र बेन्हदद के पास भेजा। "मेरे और तुम्हारे बीच एक संधि हो जाए," उसने कहा, "जैसा कि मेरे पिता और तुम्हारे पिता के बीच हुई थी।" देख, मैं तुझे सोने-चाँदी का उपहार भेज रहा हूँ; अब इस्राएल के राजा बाशा के साथ अपनी सन्धि तोड़ डालो, और वह मुझ से अलग हो जाएगा।"

अब बेशक, आप एक मानचित्र को देखते हैं और आपको एहसास होता है कि वह जो कर रहा था वह बाशा के उत्तरी साम्राज्य की पीठ के पीछे जा रहा था, आप कह सकते हैं। सीरिया उत्तरी साम्राज्य के उत्तर पूर्व में था। वह इस संधि को समाप्त करता है और बेन-हदद को अपनी चाँदी का भुगतान करता है और उससे उस गठबंधन को तोड़ने के लिए कहता है जो बेन-हदद ने उत्तर के साथ किया था। और बेन-हदद ऐसा करता है। श्लोक 20: "वह राजा आसा से सहमत था," और फिर उसने उत्तरी साम्राज्य पर हमला किया। बेन-हदद ने इज़ोन, दान, हाबिल माका और गलील के समुद्र तक के सभी किन्नरेथ पर विजय प्राप्त की। जब बाशा ने यह सुना तो उसने रामा का निर्माण बंद कर दिया और तिरज़ा चला गया, जो उस समय उत्तरी साम्राज्य की राजधानी थी।

अब, जो कुछ किंग्स में दर्ज नहीं है वह यह है कि आसा को ऐसा करने के लिए डांटा गया था; अर्थात्, बेन-हदद के साथ गठबंधन बनाना। हनानी द्रष्टा द्वारा, 2 इतिहास 16, श्लोक 7, जो उस समझौते के बारे में बताता है जो आसा ने बेन्हदद के साथ किया था, आपने श्लोक 7 में पढ़ा, "उस समय हनानी द्रष्टा यहूदा के राजा आसा के पास आया और कहा 'क्योंकि तू ने अपने परमेश्वर यहोवा पर नहीं, परन्तु अराम के राजा पर भरोसा रखा, इस कारण अराम के राजा की सेना तेरे हाथ से छूट गई है। क्या कूशी और लीबियाई बड़े-बड़े हथियारों, रथों, और सवारोंवाली सामर्थी सेना न थे, तौभी जब तुम ने यहोवा पर भरोसा रखा, तब उस ने उनको तुम्हारे हाथ में कर दिया। क्योंकि जिनका मन पूरी तरह से उस पर लगा हुआ है उन्हें बल देने के लिये यहोवा की दृष्टि पृथ्वी पर चारों ओर लगी हुई है। तुमने मूर्खतापूर्ण कार्य किया है; अब से तुम युद्ध में रहोगे।"

ध्यान दें कि आसा क्या करती है: आसा इस वजह से द्रष्टा से नाराज है; इतना क्रोधित होकर उसने हनानी को जेल में डाल दिया। और तुम पढ़ते हो, कि इस कारण उसके पाँव में रोग हो गया (आयत 12), और अपनी बीमारी में भी उस ने यहोवा से नहीं, परन्तु केवल वैद्यों से सहायता मांगी।



उस बीमारी का उल्लेख किंग्स (1 किंग्स 15:23) में किया गया है: "आसा के शासनकाल की सभी अन्य घटनाएं, उसकी सभी उपलब्धियां, उसके द्वारा किए गए सभी कार्य और उसके द्वारा बनाए गए शहर, क्या वे इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं? यहूदा के राजा? हालाँकि, बुढ़ापे में उसके पैर रोगग्रस्त हो गए।" और यह कहता है कि वह मर गया और अपने पुरखाओं के पास सो गया। अब उसके लिए न्याय किया जा रहा है, बेन-हदाद के साथ इस गठबंधन के लिए द्रष्टा हनानी द्वारा उसकी निंदा की गई है।

लेकिन मुझे लगता है कि आप यहां जो घटित होते देख रहे हैं वह कुछ महत्वपूर्ण है। यह वास्तव में सीरिया और न केवल उत्तरी साम्राज्य, बल्कि दक्षिणी साम्राज्य के बीच भी एक लंबे संघर्ष की शुरुआत है। (सीरिया या अराम के बीच, जो एक ही शब्द है) और उत्तरी और दक्षिणी साम्राज्य।

आसा यहां कुछ ऐसा करता है जो वास्तव में एक उदाहरण स्थापित करता है, जिसका अनुसरण बाद में आहाज द्वारा किया जाता है, जिसके लिए यशायाह आहाज की निंदा करता है। जब आहाज को उत्तरी साम्राज्य और सीरिया, या अराम ने एक साथ धमकी दी, तो उसने क्या किया? वह वास्तव में वही काम करता है, सिवाय इसके कि अब वह और आगे बढ़ जाता है। वह अराम और उत्तरी साम्राज्य के दबाव से मुक्ति पाने के लिए असीरिया के तिगलाथ-पिलेसेर के साथ गठबंधन बनाता है और यशायाह इसके लिए आहाज की निंदा करता है। जहां तक आसा का सवाल है, यहां भी वही चल रहा है। अब, बेन-हदाद को हम सीरिया में पाए गए एक शिलालेख से भी जानते हैं, जिस पर दमिश्क के राजा का नाम लिखा हुआ है। यह एक और खंड है जो प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद है। यह कहा जाता है *प्राचीन काल के दस्तावेज़* पृष्ठ 239 पर उसका एक चित्र है; आप इसे पास कर सकते हैं. ठीक है चलो यहाँ थोड़ा आगे चलते हैं।

### C. इज़राइल के पहले दो राजवंश

#### 1. यारोबाम का राजवंश - 1 राजा 11:26-14:20

एक। यारोबाम राजा बने - 1 राजा 12:1-20

"सी" है: "इज़राइल के पहले दो राजवंश।" हम यहूदा के पहले तीन राजाओं से गुज़र रहे हैं।

अब हम वापस जाते हैं और इज़राइल के पहले दो राजवंशों को उठाते हैं। पहला यारोबाम का

राजवंश है। 1 राजा 11:26-14:20. वहां ये पांच उप-बिंदु हैं। पहला है: "यारोबाम राजा बना," अध्याय 12:1-20। हम पहले ही अध्याय 12 को रहूबियाम और उत्तरी जनजातियों द्वारा रहूबियाम के अधीन होने से इनकार के संबंध में देख चुके हैं, और आपने वहां श्लोक 20 में पढ़ा है; "जब सब इस्राएलियों ने सुना कि यारोबाम लौट आया है, तब उन्होंने उसे सभा में बुलवाया, और उसे सारे इस्राएल पर राजा नियुक्त किया। केवल यहूदा का गोत्र ही दाऊद के घराने के प्रति वफ़ादार रहा।" तो शकेम की वही सभा जिसे हमने रहूबियाम के संबंध में देखा था और उस अनुरोध को जो बोझ को हल्का करने और उसके इनकार करने के लिए किया गया था, फिर यारोबाम की ओर मुड़ती है और उसे राजा बनाती है। अतः वह 1 राजा अध्याय 12 में वहां का राजा बन जाता है।

बी। यारोबाम ने अवैध पूजा की स्थापना या शुरुआत की - 1 राजा 12:25-33

"बी" है: "यारोबाम अवैध पूजा की स्थापना या शुरुआत करता है, 12:25-33।" अध्याय के उत्तरार्ध में श्लोक 25 में आपने पढ़ा, "यारोबाम ने एप्रैम के पहाड़ी देश में शकेम को दृढ़ किया और वहाँ रहने लगा," लेकिन फिर उसे चिंता हुई कि उत्तर के लोग बलि चढ़ाने के लिए मंदिर में जाते रहेंगे। और इसलिए उसने निर्णय लिया कि वह बेथेल और दान में पूजा स्थल स्थापित करेगा। अब बेथेल एप्रैम के दक्षिणी भाग में उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के बीच की सीमा की ओर है। निःसंदेह, डैन उत्तर की ओर बहुत दूर है। इसलिए उन्होंने उन दोनों स्थलों पर पूजा की स्थापना की।

ऐसा लगता है कि मोज़ेक आज्ञाओं का उल्लंघन जो यहां शामिल है, वह पहली की तुलना में दूसरी आज्ञा है, अर्थात्, "तू अपने लिए कोई खोदी हुई छवि नहीं बनाएगा..." संभवतः पहली आज्ञा से अधिक "तुम्हारे पास कोई भी नहीं होगा" मुझसे पहले अन्य देवता।" आप पढ़ते हैं, पद 28 में आप देखते हैं, उसने लोगों से कहा, "तुम्हारे लिये यरूशलेम तक जाना कठिन है; हे इस्राएल, तेरे देवता यहीं हैं, जो तुझे मिस्र से निकाल लाए।" एक बेथेल में और दूसरा डैन में स्थापित किया गया है।

यह बिल्कुल वही बात है जो निर्गमन अध्याय 32 में उस समय कही गई थी जब हारून ने जंगल में सोने का बछड़ा स्थापित किया था, जबकि इज़राइल अभी भी सिनाई में था। मुझे देखने दो कि क्या मुझे संदर्भ मिल सकता है। वास्तव में निर्गमन 32, पद 4 है। उन्होंने कहा, "हे इस्राएल, ये तुम्हारे देवता हैं, जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाए" जब उन्होंने उस मूल सुनहरे बछड़े को आकार दिया।

अब ऐसा लगता है कि इन बछड़ों को बनाने में क्या चल रहा था। बछड़ों या बैलों के शिलालेख पाए गए हैं जिनमें बछड़े की पीठ पर खड़े देवताओं की तस्वीरें हैं, इसलिए बछड़ा देवता के लिए एक आसन की तरह है। और कई लोग महसूस करते हैं कि निर्गमन 32 में और यहां भी जो किया गया था, वह यह था कि यारोबाम को बछड़ा बनाना था लेकिन उस पर देवता की छवि नहीं रखनी थी। इसलिए इसे निर्गमन 32 की तरह मान लिया गया था, आप बाद में अध्याय में पाते हैं, जैसे श्लोक 8 में, यह कहता है, "हे इस्राएल, ये तुम्हारे देवता हैं, जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाए।" वह कहता है कि यह यहोवा के लिए एक पर्व है, यह श्लोक 5 में है। जब हारून ने यह देखा, तो उसने बछड़े के सामने एक वेदी बनाई और उसने घोषणा की, "कल यहोवा के लिए एक उत्सव होगा।" तो ऐसा प्रतीत होता है कि इस सुनहरे बछड़े के संबंध में यहोवा की पूजा की जा रही थी।

तो क्या बछड़े को एक आसन के रूप में देखा गया था जिस पर यहोवा का अदृश्य रूप निवास करता था, लेकिन उन्होंने यहोवा की कोई वास्तविक छवि नहीं बनाई थी, या क्या बछड़े को किसी प्रकार का प्रतिनिधित्व, शक्ति का प्रतीकात्मक रूप माना जाता था यहोवा की, (यह कुछ हद तक विवादित हो सकता है), लेकिन ऐसा लगता है कि यहाँ प्रयास यहोवा की पूजा करने का था, लेकिन नाजायज तरीके से। तो उल्लंघन पहले की तुलना में दूसरी आज्ञा का अधिक होगा। लेकिन किसी भी मामले में, यह एक पाप है जिसके लिए यारोबाम का न्याय किया गया था और जिसके लिए उत्तर में हर राजा जिसने उस पूजा को जारी रखा था, का न्याय किया गया क्योंकि उन्होंने इस्राएल को नबात के पुत्र यारोबाम के पाप के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया।

अब मुझे लगता है कि इससे थोड़ा और आगे बढ़ने पर, आप यारोबाम को जो करते हुए पाएंगे वह पूजा को राजनीति के अधीन करना है। वह अपने राज्य की सुरक्षा और अपने लोगों की वफादारी के लिए चिंतित था। तो वह स्पष्ट रूप से उस दूसरे आदेश का उल्लंघन करता है, शायद पहले आदेश का भी, लेकिन स्पष्ट रूप से दूसरे का और इन नाजायज पूजा स्थलों को स्थापित करता है।

**छात्र प्रश्न:** क्या उसने कानूनों का एक नया सेट बनाया या क्या वह इज़राइल की कानूनी संरचना को जारी रखना चाहता था?

**वर्नाय की प्रतिक्रिया:** ऐसा लगता है कि शायद दोनों में से कुछ। मुझे लगता है कि उसने संभवतः दोनों में से कुछ किया है क्योंकि आपने श्लोक 32 में पढ़ा है, "उसने 15 में त्योहार की

स्थापना की। "8 वां दिन महीना," यहूदा में आयोजित त्योहार की तरह, लेकिन यह एक अलग समय पर है। आप श्लोक 33 में देखते हैं, "15 वें 8 का दिन वह अपनी इच्छा के अनुसार एक महीना वेदी पर बलि चढ़ाता था।" तो, ऐसा लगता है जैसे उसने मोज़ेक कानून और उसके अपने संशोधनों में जिन चीज़ों का पालन करना था उनमें से एक को चुना।

सी। यहूदा के पैगंबर - 1 राजा 13

ठीक है, "सी।" है: "यहूदा के पैगंबर, 1 राजा 13।" यह एक बहुत ही दिलचस्प अध्याय है। यह अनाम भविष्यवक्ता है: उसे "यहूदा से परमेश्वर का एक आदमी" कहा जाता है। वह बेथेल जाता है। यारोबाम वहाँ बलिदान देने के लिए खड़ा है, और वह उस वेदी के निर्माण के लिए यारोबाम की निंदा करता है। ऐसा करने की प्रक्रिया में, वह कहता है कि दाऊद के घराने का योशियाह नाम का एक बच्चा एक दिन इन नाजायज पुजारियों की हड्डियों को जला देगा जिन्हें यारोबाम ने बेतेल में उस वेदी पर बलिदान करने के लिए सुरक्षित किया था। अब, यह एक उल्लेखनीय भविष्यवाणी है क्योंकि योशियाह इस समय के बाद लगभग 300 वर्षों तक शासक नहीं रहा। हम 931 में हैं; योशियाह 620 वर्ष का था, इसलिए आप योशियाह के समय से लगभग 300 वर्ष पहले हैं। आपका कथन था कि "योशियाह आएगा और उस वेदी को नष्ट कर देगा और उस पर याजक की हड्डियाँ जला देगा।" यदि आप योशियाह के समय में देखें तो यह आपको मिलेगा जो उसके शासनकाल में हुआ था। तो आपके पास एक अद्भुत भविष्यवाणी है।

यह दिलचस्प है, एक तरफ की तरह, यह भविष्यवाणी उस लंबी अवधि के लिए लेवितिक राजवंश की निरंतरता मानती है, जबकि उत्तरी साम्राज्य में आपके पास चार, असंबद्ध राजवंश और कई अलग-अलग राजा हैं जिन्होंने राजवंशों की स्थापना नहीं की। आपके पास उत्तर में एक सुसंगत रेखा नहीं थी। इस भविष्यवाणी का तात्पर्य है कि, निश्चित रूप से, दक्षिण में एक ऐसी रेखा होगी जो वैसे भी डेविड के वादे के अनुरूप है।

लेकिन उस भविष्यवाणी के संबंध में, जो दीर्घकालिक है, वह हमें एक अल्पकालिक भविष्यवाणी देता है। और पद 3 में आप पढ़ते हैं, "उसी दिन परमेश्वर के जन ने एक चिन्ह दिया। यह वह चिन्ह है जो यहोवा ने घोषित किया है: वेदी टुकड़े-टुकड़े कर दी जाएगी और उस पर राख डाल

दी जाएगी।" और पद 5 में तुम पढ़ते हो, कि परमेश्वर के जन के द्वारा यहोवा के वचन के द्वारा दिए गए चिन्ह के अनुसार वेदी राख के समान फट गई। तो आपके पास एक लंबी अवधि की भविष्यवाणी है जिसकी पुष्टि, या प्रमाणित, एक अल्पकालिक भविष्यवाणी द्वारा की जाती है जो ठीक उसी दिन पूरी हुई थी जिस दिन इन लोगों ने देखा था।

इस बीच, यारोबाम अपना हाथ बढ़ाता है - यह पद 4 है - और कहता है, "इस भविष्यवक्ता को पकड़ो।" जब वह अपना हाथ बढ़ाता है, तो वह सिकुड़ जाता है और वह उसे वापस नहीं खींच पाता। और इसलिए वह श्लोक 6 में कहता है: "अपने परमेश्वर यहोवा से विनती करो; मेरे लिए प्रार्थना करो कि मेरा हाथ ठीक हो जाए। भविष्यवक्ता ने प्रभु से प्रार्थना की और उसका हाथ पहले जैसा अच्छा हो गया। तो आपके पास फिर से इस तथ्य का एक और प्रमाणीकरण है कि भगवान इस लोगों में और यहूदा से बाहर भगवान के इस आदमी के माध्यम से काम कर रहे थे।

फिर, यारोबाम ने इस भविष्यवक्ता को घर जाने और उसके साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया, लेकिन भविष्यवक्ता ने कहा कि वह ऐसा नहीं कर सकता। श्लोक 9 कहता है, "मुझे प्रभु के वचन द्वारा आज्ञा दी गई थी, 'तुम्हें रोटी नहीं खानी चाहिए या पानी नहीं पीना चाहिए, या जिस रास्ते से तुम आए हो उसी रास्ते से लौटना नहीं चाहिए।'" और इसलिए वह एक अलग तरीके से घर से शुरू होता है, और वहां आप बाद में पढ़ते हैं वह अध्याय जिससे उसकी मुलाकात होती है और बूढ़ा भविष्यवक्ता उससे कहता है, "मैं भी एक भविष्यवक्ता हूं। और एक स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, 'उसे अपने साथ अपने घर ले आ कि वह रोटी खाए और पानी पीए।' घर, और फिर जब वे मेज पर बैठे थे, प्रभु का वचन उस बूढ़े भविष्यवक्ता के पास आया, और प्रभु का वचन उसकी अवज्ञा के लिए न्याय का संदेश था। पद 21: यहोवा यों कहता है, तुम ने यहोवा के वचन का उल्लंघन किया है, तुम ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया; परन्तु जिस स्थान में उस ने तुम से न कहा वहां आकर तुम ने रोटी खाई, और पानी पिया। खाने या पीने के लिए. इसलिये तुम्हारा शरीर तुम्हारे पुरखाओं की कब्र में दफनाया न जाएगा।" दूसरे शब्दों में, उसकी सामान्य मृत्यु नहीं, बल्कि किसी प्रकार की असामान्य मृत्यु होने वाली है।

जैसे ही वह अपनी यात्रा पर आगे बढ़ता है, उसकी मुलाकात एक शेर से होती है और वह मारा जाता है, और दिलचस्प बात यह है कि शेर गधे के साथ उसके शरीर के पास खड़ा रहता है और

गधे पर हमला नहीं करता है, और वह शरीर को क्षत-विक्षत नहीं करता है। यह स्पष्ट संकेत है कि यहां चमत्कारी चीजें चल रही हैं। लेकिन यह एक दुखद कहानी है क्योंकि यहीं वह भविष्यवक्ता था जिसने आकर उस वेदी के सामने प्रभु का वचन सुनाया और यह अद्भुत भविष्यवाणी की, और फिर भी वह पूरी तरह से आज्ञाकारी नहीं था; और यद्यपि प्रभु ने उससे कुछ न करने को कहा था, फिर भी उसने वैसा ही किया, और तब प्रभु ने उसका न्याय किया। अब, मुझे लगता है कि उसमें से बहुत कुछ यारोबाम के लाभ के लिए था। उसे प्रभु के वचन की शक्ति को काम करते हुए देखना था।

लेकिन आपने अध्याय के अंत में श्लोक 33 में पढ़ा, इसके बाद भी यारोबाम ने अपने बुरे तरीके नहीं बदले। उसने एक बार फिर ऊंचे स्थानों के लिये सब प्रकार के लोगों में से याजक नियुक्त किए। जो कोई याजक बनना चाहता था, वह ऊंचे स्थानों के लिये अभिषेक करता था।

मुझे लगता है कि यह कहानी दिखाती है कि आपको एक अच्छे इंसान और एक बुरे भविष्यवक्ता के बीच अंतर करना होगा। बिलाम दुष्ट था, परन्तु फिर भी उसने भविष्यवाणी की। इस मामले में, इस पुराने भविष्यवक्ता ने झूठ बोला, परन्तु जब प्रभु का वचन आया, तो उसने यह कहा। मुझे लगता है कि इस बिंदु पर, उनका व्यक्तिगत हित जो भी था, इसके कारण उन्होंने कुछ बहुत गलत किया।

एशले बुसोन द्वारा प्रतिलेखित  
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित  
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन  
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया